एम० ए० चतुर्थ सेमेस्टर

प्रथम प्रश्न पत्र (स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी गद्यसाहित्य)

डॉ० ममता मिश्रा (हिन्दी विभाग)

उपन्यास - मैला आंचल (फणीश्वर नाथ 'रेणु')

(वस्तु शिल्प एवं आंचलिकता)

सन् पचास से साठ के दशक हिन्दी उपन्यास का एक नया रूप हमारे सामने आया जिसे 'आंचलिक उपन्यास' कहा गया। उपन्यास को आंचलिक कहने तथा उसकी महत्ता की आलोचकों का ध्यानआकृष्ट करने का श्रेय सुप्रसिद्ध उपन्यासकार फणीश्वरनाथरेणु जी को है। 1954 ई० में प्रकाशित अपने उपन्यास मैला आंचल को आंचलिक उपन्यास की संज्ञा प्रदान करते हुए इसकी भूमिका में लिखा है—"यह है मैला आंचल, एक आंचलिक उपन्यास, कथानक है पूर्णिया, मैंने इसके एक हिस्से के एक गाँव को पिछड़े गाँव का प्रतीक मानकर इस उपन्यास का कथा क्षेत्र बनाया है।"

अंचल का शाब्दिक अर्थ-जनपद या क्षेत्र। जिन उपन्यासों में किसी विशिष्ट प्रदेश के जनजीवन का समग्र बिम्बात्मक चित्रण होता है,

Scanned with CamScanner

उन्हें आंचलिक उपन्यास कहा जाता है। इन उपन्यासों का मूल उद्देश्य किसी विशिष्ट अंचल के समग्र जीवन का विशद चित्रण करना होता है, अतः उसमें जनपद के भूगोल, सभ्यता, रहन-सहन, वेशभूषा, रूढ़ियां, सामाजिक परम्पराएं, लोक जीवन, त्योहार, पर्व, नृत्य-गीत, रीति-रिवाज, लोक भाषा, लोकोक्तियां एवं मुहावरे, राजनीतिक चेतना, आर्थिक कठिनाइयाँ आदि का समावेश रहता है।

आंचलिक उपन्यासों में कुछ मूल तत्व समाहित रहते हैं, जैसे-

1- अंचल विशेष की भौगोलिक स्थिति का तथ्यपरक चित्रण,

2- कथानक का आंचलिक आधार,

3- अंचल की लोक संस्कृति का निरूपण,

4- आंचलिक भाषा में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली का प्रयोग,

5- अंचल की राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का निरूपण।

'मैला आंचल' फणीश्वर नाथ 'रेणु' कृत 1954 ई० में प्रकाशित एक सुप्रसिद्ध आंचलिक उपन्यास है। 'मैला आंचल' के कथानक में 'रेणु' जी ने 1942 ई० से लेकर गांधी जी के निधन तक की मेरीगंज (जिला-पूर्णिया-

③

जिला पूर्णिया - प्रान्त बिहार) के जनजीवन और परि-
स्थितियों का जीवन्त चित्र प्रस्तुत किया है। गांव में
विभिन्न वर्गों के लोग अपने अपने टोलों में रहते हैं।
मेरीगंज एक अत्यन्त पिछड़ा हुआ गाँव है जिसमें निम्न-
वर्ग, उच्च वर्ग एवं धनीवर्ग के लोग रहते हैं। इनमें आपसी
वैमनस्य रहता है और आये (रोज) - दिन संघर्ष चलता रहता है।
आजादी मिलने के बाद निम्न वर्ग में भी एक नई
चेतना जागृत हुई, जिसके कारण आपसी वैमनस्य और
संघर्ष तीव्र हो गया। इस गाँव की प्रगति के बाधक तत्व
मूल रूप से प्राचीन रूढ़िगत संस्कार, छुआछूत, आपसी
संघर्ष, अन्धविश्वास एवं आपसी द्वेष भी था। जनता अब
अपने उन दुश्मनों को पूर्णरूपेण पहचानने लगी थी, जो
आजादी मिलते ही खद्दर पहनकर देशभक्त एवं
जनसेवा का दिखावटी वेश धारण किए हुए हैं, किन्तु
है पक्के स्वार्थी एवं मक्कार। अब जनता अपने
अधिकारों के प्रति जागरूक हो गई है। यही इस उपन्यास
की मूल चेतना है।

'मैला आंचल' यद्यपि स्वतंत्रता के उपरान्त
प्रकाशित हुआ, किन्तु इसमें स्वतंत्रता पूर्व का परिवेश
प्रस्तुत किया गया है। गाँव के लोगों की

(5)

मानसिकता इस तरह से खराब हो चुकी है कि मलेरिया सेन्टर खुलने का विरोध प्रत्येक ग्रामीण करता है। डॉक्टर प्रशान्त को यहाँ आकर इन गाँव वालों के पिछड़ेपन का खट्टा अनुभव प्राप्त होता है। वे उस अंचल के पिछड़ेपन का दस्तावेज है। सम्पूर्ण अंचल अंधविश्वास, शोषण, संघर्ष एवं निर्धनता, अशिक्षा से ग्रस्त है। इस उपन्यास के पात्र बलदेव, बावनदास, कालीचरण अपने-अपने ढंग से संघर्ष करते दिखाये गये हैं। उपन्यास के अंत में बामनदास अपना बलिदान देकर पाठकों को अपने चरित्र से प्रभावित करता है।

'मैला आंचल' में अंचल विशेष को समग्रता से देखा गया है। अभिव्यक्ति के लिए लेखक ने आंचलिक शब्दावली, लोकोक्तियों, मुहावरों का उपयोग किया है।

'मैला आंचल' में तत्कालीन राजनीति, नेताओं की अवसरवादिता, स्वार्थ वृत्ति, सिद्धान्तप्रिय कार्यकर्ताओं की उपेक्षा आदि का यथार्थ चित्रांकन किया गया है। 'रेणु' जी ने बड़ी सफाई से उपन्यास में यह दर्शाया है कि गाँधी-जी ने स्वतंत्रता आन्दोलन का संचालन जिन जीवन मूल्यों के आधार पर किया था, वे आजादी

मिलते ही नेताओं की दृष्टि में अप्रासंगिक होने लगे तथा चारों ओर सिद्धान्तहीन, स्वार्थी, अवसरवादी नेताओं की तूती बोलने लगी।

'मैला आँचल' में स्थानीय भाषा रूप उल्लेखनीय है। पूर्णिया को पुरैनिया, 'मिनिस्टर' को मेनिस्टर, 'टिकट' को 'टिकस', 'बेवकूफ' को 'बेकूफ' कह कर ग्रामीण अंचल में प्रयुक्त तद्भव शब्दावली का सुन्दर निदर्शन किया गया है।

'मेरीगंज' सम्पूर्ण देश के राजनीतिक वातावरण का नमूना प्रस्तुत करता है। यहाँ के राजनीतिक दल देश सेवा के नाम पर अपने स्वार्थों की पूर्ति कर रहे थे। उनका प्रयास दूसरे दलों को नीचा दिखाने की ओर केन्द्रित था। जमींदार और अधिकारियों के अत्याचार सहने को जनता विवश थी। संथालों को मारा-पीटा गया और उनकी जमीन भी छीन ली गई। उनके टोले को लूट लिया गया। चुनाव के समय जातिवाद हावी रहा था। चुनाव पैसे के बल पर लड़े और जीते जाते थे।

लेखक ने तटस्थ भाव से उस अंचल की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं आर्थिक स्थिति का चित्रण किया है। जनता भले ही अशिक्षित हो किन्तु स्वार्थपरायण लोगों की स्वार्थपरता को समझ ही लेती है। इस उपन्यास का नायक कोई व्यक्ति न होकर अंचल है।

'मैला आँचल' में 'रेणु जी का चिन्तन

प्रगतिशील हैं। वे जनसाधारण के समर्थक हैं और उभरते पूंजीवाद की विकृतियों का यथातथ्य चित्रण करते हुए पाठकों के मन में पूंजीवाद के प्रति घृणा उत्पन्न कर देने में सक्षम हैं। 'रेणु' जी गरीब का पक्षधर बनकर सामने आए हैं। 'मैला आंचल' में चित्रित गरीब किसानों, मजदूरों, संथालों के संघर्ष को उन्होंने अपना समर्थन दिया है और इस प्रकार प्रेमचन्द के आदर्शोन्मुख यथार्थ को आगे बढ़ाया है।

स्थानीय भाषा का प्रयोग करने से उपन्यास में आंचलिकता पूरी तरह उभर कर सामने आयी है। लोक भाषा का प्रयोग वातावरण का यथातथ्य चित्रण करने में तथा पात्रों के संवादों में किया गया है। प्रकृति चित्रण और भौगोलिक विवरणों ने आंचलिकता को गहरा कर दिया है।

इस प्रकार निश्चय ही वस्तु और शिल्प दोनों की दृष्टियों से 'रेणु' जी का 'मैला आंचल' एक सफल आंचलिक उपन्यास कहा जा सकता है।

डॉ० ममता मिश्रा
हिन्दी - विभाग
नेहरू ग्राम भारती (मानित)
वि० वि० प्रयागराज

Scanned with CamScanner